हिन्दू-मुस्लिम सम्बंध

(क़ुरआनी शिक्षाओं की दृष्टि में)

मौलाना इनायत उल्लाह सुब्हानी

अनुवादक–
डॉ. रफ़ीक़ अहमद

आज का इन्सान हो या कल का, वह अल्लाह तआला की दी हुई सारी नेमतों से दिल खोलकर फ़ायदा उठाता है और उससे आनन्दित होता है, मगर जब उसके भेजे हुये दीन, और उसके नाज़िल किये हुये पवित्र क़ुरआन को मानने की बात आती है, तो उसके दिल व दिमाग़ के सारे दरवाज़े बन्द हो जाते हैं। वह अपने अन्दर उसके लिये कोई आमादगी नहीं पाता।

वह कहता है, यह तो मुसलमान की किताब है ! हमारे लिये इस किताब में क्या रखा है ? कहने वाले इस तरह की बातें क्यों कहते हैं ? शायद इसकी वजह यह है कि उन्होंने इस्लाम और क़ुरआन पाक की सही तस्वीर नहीं देखी। उन्हें दीन इस्लाम और क़ुरआन पाक की वह तस्वीर देखने को मिली, जिसमें उन्हें ख़ुदा रहमत और मुहब्बत के जलवे नज़र नहीं आयें।

उन्हें इस दीन के अन्दर शाने करीमी के वह जलवे नज़र नहीं आये, जो जलवे उन्हें सूरज की किरणों, चाँद की चांदनियों, तारों की झुरमुटों, सुबह के झोकों और बारिश की बूदों में नज़र आये।

लिहाज़ा इन सारी नेमतों के बारे में तो उन्हें यह यक़ीन होता है कि यह उनके पालनहार की दी हुई नेमतें हैं, मगर उस दीन और उस क़ुरआन पाक के बारे में यह समझना उनके लिये मुश्किल होता है कि यह उनके

पालनहार का भेजा हुआ दीन और उनके रब की भेजी हुई किताब है।

ऐसा क्यों है ? इसके अनेक कारण हो सकते हैं।

इसकी एक वजह तो यह हो सकती है कि दीने इस्लाम और क़ुरआन के रूप में जो नेमत हासिल होती है, वह सीधे तौर पर नहीं हासिल होती, बल्कि किसी माध्यम से हासिल होती है, प्यारे नबी सल्ल० को हज़रत जिब्रील के वास्ते से जो नेमत हालिस हुई, फिर आपके माध्यम से सहाबा-ए-कराम रज़ि० को हासिल हुई, सहाबा-ए-कराम रज़ि० के माध्यम से बाद वालों को हासिल हुई, इसी प्रकार नस्ल दर नस्ल ये नेमत एक से दूसरे को मिलती रही, और उसी तरह क़ियामत तक आने वाली नस्लों में मुन्तक़िल होती रही।

यह है इस्लाम की नेमत, और क़ुरआनी नेमत का मामला, जो इन्सान को किसी माध्यम से हासिल होती है, जबकि दूसरी सारी नेमतें ऐसी होती हैं, जिनके और इन्सान के दरम्यान कोई दूसरा माध्यम नहीं होता, इन्सान सीधे तौर पर उन्हें अपनी ऑखों से देखता है, भौतिक रूप में उन्हें महसूस करता है और उनकी बर्कतों से लाभान्वित होता है।

जब यह नेमते इस्लाम, और यह नेमते क़ुरआन सीधे तौर पर हासिल होती है, तो जब तक इस दरम्यानी

माध्यम पर भरपूर विश्वास न हो, इस नेमत की तरफ तवज्जो नहीं होती, बल्कि अक्सर ऐसा होता है कि इन्सान इस नेमत को शक व शुब्हे की निगाह से देखता है और उससे..... हो जाता है।

अक्सर ऐसा भी हुआ है, कि बीच का माध्यम पूरे तौर पर से विश्वस्नीय और हर शक-शुब्हे से परे था और इस नेमत का नेमत होना सब पर स्पष्ट था, मगर क़ौम के सरदारों और शासकों ने उसे अपनी घटिया मसलहतों के खिलाफ समझा, और उसके खिलाफ इतना अधिक झूठा प्रचार किया, कि लोग उससे बिदक गये, और अपने बदनीयत और बुरे सरदारों और शासकों का ही साथ देते रहें नबीओं के साथ ऐसा ही हुआ।

कोई भी नबी और कोई भी रसूल ऐसा नहीं आया, जिसकी सच्चाई, जिसकी ईमानदारी और जिसकी ख़ैरख्वाही पर पूरी क़ौम को विश्वास न हो, हर नबी और हर रसूल नबूअत और रिसालत का बोझ उठाने से पहले अपनी कौम की ऑखों का तारा होता था, मगर इसके बावजूद कौम की बड़ी तादाद उनकी दावत को ठुकराती रही, और अपने स्वार्थी और बेईमान, बदकिरदार सरदारों और शासकों का ही साथ देती रही।

दीने इस्लाम और किताबे इलाही का मामला ज़्यादातर ऐसा ही रहा है, लोगों ने उसके सिलसिले में

अपनी अक़्लों को कम इस्तेमाल किया है, स्वार्थियों और आराजक तत्वों के झूठे प्रोपेगन्डों का ज़्यादा असर लिया है।

दीने इस्लाम और क़ुरआन पाक से बेपरवाई की एक दूसरी वजह यह भी हो सकती है कि यह नेमत ऐसी होती है, जो न हाथों से छुई जा सकती है, न ऑखों से देखी जा सकती है, बल्कि यह दिल व दिमाग से समझी और महसूस की जाती है, और दिल व दिमाग़ को सही तौर से इस्तेमाल करना और किसी मामले में सही नतीजा तक पहुंचना सबके बस की बात नहीं होती ।

दीने इस्लाम और क़ुरआन पाक से बेपरवाई की एक तीसरी वजह यह भी हो सकती है कि उसकी लज़्ज़त और उसकी बर्कत फौरन हासिल नहीं होती, वजह यह है कि इस्लाम एक जीवन व्यवस्था है, जो सम्पूर्ण जीवन पर हावी है, और जब तक पूरी ज़िन्दगी इस रंग में रंग न जाये, उसकी लज़्ज़त पाना, और उसकी बर्कतों से मालामाल होना मुम्किन नहीं होता, उसके लिये बहुत कुछ मेहनत और परिश्रम करना होता है, विभिन्न प्रकार की क़ुर्बानियां देनी होती है। इम्तेहान और परीक्षण के विभिन्न चरणों से गुज़रना होता है।

ये मुख्तलिफ सबब हैं, जिनकी वजह से नेमते इस्लाम और नेमते क़ुरआन की कद्र करने वाले बहुत कम

पाये जाते हैं, हिन्दू भाईयों या ग़ैर मुस्लिमों को क्या कहा जाये ? यहां तो हालत यह है कि वह मुसलमान जिनको नेमते इस्लाम और नेमते क़ुरआन अपने बुज़ुर्गों से विरासत में मिली है, वह भी उसकी अज़मत और महानता को समझने से क़ासिर हैं। वह मुसलमान होते हुये भी इस्लाम की लज़्ज़त से बेखबर और क़ुरआन की रोशनी से नावाकिफ़ रहते हैं, वह दूसरे नज़रिये और विचारधाराओं से प्रभावित रहते और उनकी अंधेरी घाटियों में भटकते रहते हैं।

हालांकि यह दीन और यह क़ुरआन इन सारी नेमतों से बड़ी नेमत है, जिनका इन्सान अपनी ज़िन्दगी में रात व दिन अनुभव करता, उनसे फ़ायदा उठाता और उनके लिये जान देता है।

दूसरी तमाम नेमतें कुछ दिनों के लिये होती हैं, जो इसी ज़िन्दगी से सम्बंध रखती हैं, और वह नेमत होते हुये भी कभी इन्सान के लिये नुक़सानदेह बल्कि बवाले जान बन जाती हैं।

वही हवा, और वही पानी जो ज़िन्दगी और क़ूव्वत का ज़रीआ होता है, अक्सर ऐसा होता है कि वह क़ियामत बरपा करने वाला तूफ़ान का रूप धारण कर लेता है, वह नाक़ाबिले तसव्वुर तबाहियां लाता और बस्तियां की बस्तियां बहा ले जाता है।

वही औलाद, जिसके जन्म दिन पर इन्सान खुशियां मनाता, और मिठाइयां बाटी जाती हैं, जिसको अपने बगीचे का बसन्त, अपने घर का चिराग़ और अपनी ज़िन्दगी का सहारा समझता है, कभी वही औलाद उसके लिये अज़ाब और मुसीबत बन जाती है।

दुनिया की सारी नेमतों का यही हाल है, हर नेमत के दो रुख होते हैं, एक खुशी का और दूसरा नसीहत लेने का। इसके विपरीत दीने इस्लाम ऐसी नेमत है, जो हमेशा नेमत ही रहता है, और वह हर प्रकार की परिस्थितियों में इन्सान के लिए इ़ज़्ज़त व इहतेराम का ज़रीआ होता है, वह न सिर्फ इस दुनिया में इन्सान की इ़ज़्ज़त और कामयाबी में वृद्धि करता है, बल्कि इस दुनिया के साथ-साथ वह दूसरी दुनिया या और मौत के बाद मिलने वाली ज़िन्दगी में और कामयाबी की ज़मानत देता है।

दुनिया को यह जानना चाहिये कि ये दीने-इस्लाम मुसलमानों के लिए नहीं, बल्कि सारे इन्सानों के लिये आया है, यह क़ुरआन पाक मुसलमानों के लिए नहीं, बल्कि सारे इन्सानों के लिये नाज़िल हुआ है।

बिलकुल इसी तरह जिस तरह सूरज की रोशनी और चांद की चांदनी सिर्फ़ मुसलमानों के लिए नहीं, बल्कि सारे इन्सानों के लिये होती है, यह अलग बात है कि कौन

इस नेमत की क़दर करता है और कौन नाक़दरी करता है।

यह दीने इस्लाम उन लोगों का भी दीन है, जिन्होंने इसे क़ुबूल किया और उन लोगों का भी दीन है जिन्होंने इसे ठुकरा दिया।

यह पवित्र क़ुरआन उन लोगों का भी ग्रंथ है जिन्होंने उसे पहचाना और सीने से लगाया और उन लोगों का भी ग्रंथ है जिन्होंने उसे ठुकरा दिया और उससे रुख फेर लिया।

जिस समय हज़रत मुहम्मद सल्ल० का आगमन हुआ, और पवित्र क़ुरआन अवतरित हुआ, और आपने इस्लाम की दावत दी, उस समय धरती पर एक भी मुसलमान नहीं था, पवित्र क़ुरआन का पहला मुख़ातिब ग़ैर-मुस्लिम और मूर्तिपूजक समाज था, फिर यह क्योंकर मुम्किन था कि उसकी शिक्षाओं में हिन्दू-मुस्लिम या मुस्लिम या ग़ैर मुस्लिम का भेदभाव होता ?

बुनियादी तौर पर सारे इन्सान अल्लाह के बन्दे और उसकी रचना है, इस हैसीयत से वह अल्लाह की निगाह में बराबर हैं और उसकी सारी नेमतों में बराबर से शरीक हैं। इसी प्रकार इन्सान चाहे वह हिन्दू हों या पारसी, यहूदी हों या ईसाई या मुस्लिम सब एक मां-बाप, यानी हज़रत आदम और हज़रत हव्वा की सन्तान हैं, इस प्रकार वह मुस्लिम हों या ग़ैर मुस्लिम मर्द हों या औरत, सब आपस में भाई-भाई या भाई-बहन हैं।

अल्लाह तआला ने अपनी प्रिय पुस्तक में स्पष्ट शब्दों में इस हक़ीक़त की तशरीह कर दी है, और उसके नतीजे में इन्सान की जो ज़िम्मेदारी होती है, उससे भी सचेत कर दिया है, इर्शाद होता है–

''ऐ इन्सानो ! अपने पालनहार की नाफ़रमानी से बचो जिसने तुम्हे एक ही जान से पैदा किया और उसी की जिन्स से उसका जोड़ा बनाया, और उन्हीं दोनों से इस धरती पर बहुत से मर्द और बहुत सी औरतें फैला दीं, और डरो अल्लाह से, जिसका हवाला देकर तुम एक दूसरे से अपने अधिकार मांगते हो, और सम्बंधों का सम्मान करो, अल्लाह बराबर तुम्हारी निगरानी कर रहा है'' (सूरह निसा–1)

पवित्र क़ुरआन कभी भी ग़ैर मुस्लिमों से नफ़रत करना नहीं सिखाता, इसके विपरीत वह सारे इन्सानों को एक दूसरे का भाई बताता है, यहां तक कि वह रसूलों और सन्देष्टाओं को भी उनकी काफ़िर व मुश्रिक (अधर्मी और अनेकेश्वरवादी) क़ौमों को भाई बताता है, अल्लाह तआला कहता है–

''आद की जाति वालों की तरफ़ हमने उनके भाई हूद को भेजा'' ''और समूद की तरफ उनके भाई सालेह अलै० को भेजा'' (सूरह आराफ– 73)

''और समूद की जाति वालों की तरफ़ उनके भाई सालेह को भेजा'' (सूरह आराफ–85)

इन नबीओं और रसूलों ने अपने व्यवहार और

अपने कार्यशैली से यह साबित भी कर दिया, कि वह सही अर्थो में अपनी जाति के मुखलिस और दर्दमन्द भाई हैं, उनकी मुहब्बतें और दर्दमन्दिां उनके लिये भी हैं जो उन पर ईमान लाये, और उनके लिये भी है जो उनका चिराग़ बुझाने और उन्हें पूरी तरह से विफल कर देने के लिये एड़ी चोटी का ज़ोर लगाते रहे।

पवित्र क़ुरआन से मालूम होता है कि जब रसूलुल्लाह सल्ल० की क़ौम आपके लिये बिल्कुल अन्धी बहरी होगी, आपकी सारी हमदर्दियों और मुहब्बतों का जवाब उसने गालियों और पत्थरों से दिया, और वह किसी क़ीमत पर आपकी दावत क़ुबूल करने को तैयार न हुई तो आप इसी दुश्मन क़ौम के ग़म में घुलने लगे, कि आख़िर किस तरह उन्हें गुमरही से निकाल कर सीधी मार्ग पर चला दिया। और जिस प्रकार उन्हें अल्लाह के गुस्से और उसकी गज़ब से बचालें।

चुनांचे आपको तसल्ली देते हुये अल्लाह तआला ने बार-बार फ़रमाया :

''तो ऐसा लगता है कि तुम उनके ग़म में अपने आपको मिटा डालोगें, अगर वह इस किताब पर ईमान नहीं लाते'' (सूरह कहफ-6)

''तो उन पर अफसोस और ग़म की ज़्यादती से कहीं तुम्हारी जान न चली जाये, ये लोग जो कुछ कर रहे हैं, अल्लाह उससे पूरी तरह बाखबर है'' (सूरह फातिर-8)

इतिहास साक्षी है कि मानवता उपकारक हज़रत मुहम्मद सल्ल० के चेहरये मुबारक को आपकी क़ौम ने खून से लाल कर दिया, उस वक्त भी आपके दिल में उनके लिये प्यार व मुहब्बत का दरिया बह रहा था। आप अपने चेहरे से खून की बूंदे पोछ रहे थे और अपनी ज़बान से यह अल्फाज़ निकाल रहे थे–

''ऐ मेरे रब ! मेरी क़ौम को माफ़ कर दे, यह अभी नहीं समझ रहे हैं''

मक्के में मुश्रिकीन (अनेकेश्वरवादी) रास्ते चलते हुये अपने घरों की छतों से आपके ऊपर कूड़ा डाल देते थे। आप जिन रास्तों से गुज़रते थे, इन रास्तों में कांटे बिझा देते थे। आप मस्जिदे हराम में नमाज़ पढ़ते थे तो सजदे की हालत में आपके ऊपर ऊंट की ओझरी लाकर डाल देते थे। आप क़ुरआन पाक पढ़ते थे, तो आपके साथ इन्तिहाई ज़ालिमाना व्यवहार करते थे, कि मानवता और मुरव्वत भी शर्म से आंखे मूंद लेती, कभी कानों में उंगलियां दे लेती। और जब हज़रत मुहम्मद सल्ल० के साथ उनका यह बर्ताव होता था, तो आप पर ईमान लाने वालों के साथ उनका क्या बर्ताव होता होगा। यह बताने की ज़रूरत नहीं। इतिहास की पुस्तकें उसकी तफसीलात से भरी पड़ी हैं।

मक्का के मुश्रिकों ने आपको, और आपके ऊपर जांनिसार साथियों को सताने में कोई कसर नहीं उठा रखी, लेकिन यहां देखने की चीज़ यह है कि उन सब ज्यादतियों

और गुस्ताखियों के जवाब में रसूल पाक सल्ल० और आपके खुदापरस्त साथियों का क्या रवइया रहा ? सारी ज़्यादतियों और बेरहमी के बावजूद कभी ऐसा न हुआ, कि प्यारे नबी सल्ल० ने या आपके साथियों ने मक्का के मुश्रिकों के खिलाफ़ कोई बदले की कार्यवाही की हो, इसके विपरीत वह हमेशा बुराई का जवाब अच्छाई से, ज़ुल्म का जवाब माफ़ करने से, और नफ़रतों का जवाब मुहब्बतों से देते रहे, वह हमेशा अपने मेहरबान और दयावान पालनहार की इस नसीहत के पाबन्द रहे।

''अच्छाई और बुराई बराबर नहीं हो सकती, बुराई का मुक़ाबला करो ऐसे रवइये से जो उससे बेहतर हो, फिर ऐसा होगा कि जिससे तुम्हारी दुश्मनी थी, यकायक वह ऐसा हो जायेगा, गोया वह तुम्हारा दिली दोस्त हो''।

मक्के में तो काफ़िर आपको और आपके मुसलमान साथियों को सताते ही थे, जब तमाम मुसलमान मक्के से मदीना हिजरत कर गये, उस वक्त भी मक्का वाले खामोश नहीं बैठे, वह बराबर आपके और आपके दीन के विरूद्ध नफ़रत व दुश्मनी की अंगीठियां दहकाते रहे, और लोगों को मुसलमानों से जंग के लिये उकसाते रहे।

देखने और ग़ौर करने की चीज़ यह है कि जब लगातार जंगों के बाद मुसलमान ताकतवर हो गये और दुश्मनों की ताक़त चूर-चूर हो गयी, जब वह सारे दुश्मन हज़रत मुहम्मद सल्ल० के आगे घुटने टेकने पर मजबूर हो

गये, और आप इस स्थित में हो गये कि सारे दुश्मन आपके एक इशारे पर मौत के घाट उतार दिये जायें, उस वक्त आपने उनके साथ क्या बर्ताव किया।

आपने उनके साथ दुश्मनों जैसा मामला नहीं किया बल्कि उनहें सीने से लगाया, प्यार व मुहब्बत के तख्त पर बिठाया, अपनी मुहब्बत की छांव में ठहराया और इज़्ज़त का वह मुकाम दिया जिसकी वह कल्पना भी नहीं कर सकते थे।

फिर ऐसा नहीं है कि आपका यह माफ़ी व दरगुज़र उनके लिये उम्मीद के खिलाफ़ रहा हो, बल्कि ख़ुद उनके दिल यह गवाही दे रहे थे, कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० प्यार व मुहब्बत, रहमत व दया का नमूना हैं, आप कभी उनके साथ कोई बदले की कार्यवाही नहीं कर सकते, चुनांचे आपने उनसे पूछा भी, आज तुम मुझसे क्या उम्मीद रखते हो?

इन सब लोगों ने मिलकर एक आवाज़ में कहा ''हम आपसे अच्छी उम्मीद रखते हैं। आप बहुत अच्छे भाई हैं, बहुत अच्छे भाई के बेटे हैं। उन लोगों का अन्दाज़ा सही निकला, इस दया और रहमत के पैकर ने जिसे अल्लाह तआला ने सारे ही इन्सानों के लिये दया बनाकर भेजा था इन सबको अपने दामने रहमत में ले लिया, किसी एक व्यक्ति से भी कोई पूछगच्छ नहीं की। जबकि यह सारे लोग वह थे, जो कभी आपके ख़ून के प्यासे थे। जिन्होंने आपकी

आवाज़ को दबाने, आपके मिशन को मिटाने, और आपको अपने मक़सद में नाकाम करने में कोई कमी नहीं उठा रखी थी।

यह जो कुछ हुआ, यही इस्लाम है, इस्लाम जो अल्लाह का दीन है, और क़ुरआन जो अल्लाह का कलाम है, वह उसी प्यार व मुहब्बत और उसी बडकपन और दानशीलता की शिक्षा देता है। इस धरती पर बसने वाले हिन्दू हों या मुसलमान, उन्हें दीने इस्लाम के इस स्वभाव को कभी भूलना नहीं चाहिये।

यह दीने इस्लाम बुनियादी तौर पर प्यार व मुहब्बत माफ़ी व दरगुज़र, सारे इन्सानों की भलाई, सारे कमज़ोरों की सहायता, सारे मज़लूमों के आंसू पोछने और सारे दुख के मारे हुये इन्सानों की ग़मख्वारी का दीन है। इस्लाम की यही खासीयत है जो हर सोचने वाले इन्सान को उसका आशिक बना देती है।

एक ज़माना था कि इस्लाम सूरज की रोशनी, और चांद की चांदनी की तरह देखते-देखते पूरी दुनिया में फैल गया, इस तेज़ी के साथ पूरी दुनिया में उसके फैल जाने की इसके अलावा और कोई वजह न थी कि उसने दुनिया को शक्ति एवं प्रेम और सम्मान और स्वतन्त्रता का संदेश दिया।

उस वक्त सारी मानवता जुल्म और अन्याय की चक्की में पिस रही थी, अत्यंत बेबसी के साथ कराह रही

थी, इस्लाम ने उन अत्याचारियों के अत्याचार और फ़सादियों के फ़साद से नजात दिलाया ।

शासक वर्ग के अलावा हर इन्सान गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था, इस्लाम ने वह सारी बेड़ियां काट दीं, और हर इन्सान को उसकी खोयी हुई आज़ादी वापस दिलाई।

अल्लाह तआला ने हर इन्सान को इज़्ज़त की चादर पहनाई है, चाहे वह हिन्दू हो या मुस्लिम, क़ुरआन पाक में स्पष्ट एलान है।

''और हमने आदम की संतान को इज़्ज़त दी और उन्हें खुश्की और तरी (समुद्र) में सवारियां प्रदान की और उन्हें अपनी नेमतें प्रदान की और अपनी बहुत सी रचनाओं पर शेष्ठता प्रदान की (बनी इस्राइल–70)

स्वार्थी और निर्दयी अत्याचारियों के अत्याचार से वह चादर तार–तार हो चुकी थी, इस्लाम ने आदम की औलाद को वह क़ीमती चादर फिर से पहना दी, इस तरह जुल्म व ज्यादती के पैरों से रौंदी और कुचली हुई मानवता दुबारा जिन्दगी की महानता से परिचित हो गयी, और दुबारा जीवन की शक्तियों से माला माल हो गयी।

इस दीन को अगर आपकी सभ्य दुनिया अपने लिये खतरा समझ रही है तो यह उसकी ग़लतफहमी है बल्कि सही बात यह है कि उसकी खुद फ़रेबी है, अल्लाह तआला का भेजा हुआ दीन किसी भी क़ौम, किसी भी देश के लिये

खतरा नहीं हो सकता। आज जिन भयानक और बर्बाद कर देने वाले खतरों की आंधियां चल रही हैं, और जिन मुसीबतों के बादल सारी मानवता के सरों पर मंडला रहे हैं, इन सारे ख़तरों, और उन सारे बलाओं से निकलने का मात्र अकेला रासता यही दीने इस्लाम है।

इस दुनिया को बनाने-सजाने वाले खुदा ने, और इसमें इन्सान को बसाने वाले मेहरबान रब ने यह दीन इस्लाम अपने बन्दों को किसी खतरे में डालने के लिये नहीं भेजा है, बल्कि उन्हें ज़िल्लत और अपमान से निकाल कर सम्मान और सफलता से हमकिनार करने के लिये भेजा है। कहने वाले ने कितनी सही बात कही है-

खुद फ़रेबी की ये दीवार अगर गिर जाती
आज इन्सान के दामन में सितारे होते ।

इन्सान की खैरीयत इसमें है कि वह अपने रब को पहचानें, और उसके भेजे हुये दीन पर अमल करके अपने आपको उन सारे खतरों से महफूज़ कर ले, जो उसके सर पर बुरी तरह मंडला रहे हैं।

अल्लाह के बताये हुये रास्ते के अलावा जो भी रास्ता वह अपनायागा, नाकाम और नामुराद होगा। उसका अपना सोचा हुआ हर रास्ता उसे ऐसे तवाहियों के दहाने पर ले जाकर खड़ा कर देगा, जिनसे पीछा छुड़ाना उसके बस में नहीं होगा। अल्लाह तआला हमें सोचने, समझने और सही फैसले करने की तौफीक दे।

साम्प्रदायिक सद्भाव और देश निर्माण

साम्प्रदायिक सदभाव हरेक देश और जाति के लिये बल्कि हर इन्सान की बुनियादी ज़रूरत है, साम्प्रदायिक सद्भाव के बग़ैर कोई देश शान्तिपूर्ण और पुरसुकून नहीं हो सकता, वह खुशहाल और संतुष्ट नहीं हो सकता, वह सही अर्थो में विकास एवं सभ्यता की बुलन्दियां नहीं छू सकता।

और जो देश की हालत होगी, वही उस देशवासियों की हालत होगी, इसलिये कि देश नाम ही है उस देश में रहने वाले लोगों का।

यह एक हक़ीक़त है, सूरज की तरह रौशन, मगर अफ़सोस है इस हक़ीक़त को समझने वाले कम हैं।

साम्प्रदायिक सद्भाव न हो तो विकास के सारी सम्भावनायें, और सभ्यता के सारे संसाधनों के होते हुये भी विकास की गति सुस्त होती है, और धीमी गति के साथ जो उन्नति होती भी है, इसमें स्थायित्व और पायदारी नहीं होती। इसलिये कि इस विकास में पूरे मुल्क के हाथ, और उनके मशविरे शामिल नहीं होते, उस उन्नति से सारे देश वासियो की अभिरुचियां नहीं होती।

ऐसी स्थिति में न सिर्फ़ तरक्क़ी की रफतार धीमी हो जाती है, बल्कि जो कुछ तरक्क़ी हुई होती है, इस तरक़्क़ी के ऊँचे महल कब ढह जायें, और कब धाराशायी हो जायें, ये किसी को पता नहीं होता।

साम्प्रदायिक सद्भाव न हो तो खुशहाली और सम्पन्नता का दायरा बहुत सीमित होता है, सम्पूर्ण देश की दौलत और दौलत के सारे स्रोत बस शासक वर्ग या शासक

पार्टी के हाथों सिमटकर रह जाते हैं, देश की भारी तादाद बल्कि बड़ी तादाद एक-एक निवाले को तरसती है।

खुशहाली की गंगा से बस कुछ ही लोगों के हौज़ भर पाते हैं और कुछ ही लोगों के खेत लहलहाते हो जाते हैं, आम लोगों को इससे सैराब होना नसीब नहीं होता। सामाजिक सदभाव न हो, तो बड़ी-बड़ी इन्सानी बस्तियां सुख एवं शान्ति की दौलत से वंचित रहती हैं, देश के अन्दर भी खतरे का माहौल बना रहता है और बाहरी खतरों के बादल भी हमेशा सर पर मंडलाते रहते हैं।

सामाजिक सदभाव न होने के नतीजे में आज दुनिया का कोई भी देश ऐसा नहीं है जिसे शान्तिपूर्ण और पुरसुकून कहा जा सके जिसे सभ्य और तरक्की याफ्ता कहा जा सके, जिसे खुशहाल और सम्पन्न कहा जा सके, जिसे आन्तरिक एवं बाहरी खतरों से सुरक्षित कहा जा सके।

आज इस स्थित से कोई भी सुरक्षित नहीं, चाहे वह एशिया के देश हों या अफ्रीकी देश, अमरीकन हों, या योरोपियन देश, इन सभी देशों में प्रतिदिन ऐसी-ऐसी घटनायें होती रहती हैं जिनके होते हुये कोई देश न शान्तिपूर्ण कहा जा सकता है, न ही खुशहाल और सम्पन्न न सभ्य और तरक्की याफ्ता देश कहा जा सकता है-

रोशनी की धूम है लेकिन अंधेरा आम है
सुबह भी ऐसी नज़र आती है गोया शाम है

हमारे प्रिय और खूबसूरत देश भारत का मामला भी दूसरे देशों से अलग नहीं, सुख एवं शान्ति, खुशहाली एवं

सम्पन्नता का शब्द यहां के नागरिकों के लिये बिलकुल अजनबी बन कर रह गया है।

देश की बड़ी आबादी इन परिस्थितियों से दुखी तथा ज़िन्दगी से बेज़ार नज़र आती है।

आये दिन आत्महत्या और आत्मदाह की घटनायें होती रहती हैं। आत्महत्या और आत्मदाह ही पर बस नहीं, यहां तो इससे भी ज़्यादा दहला देने वाली घटनायें आये दिन होती रहती हैं। यह मुस्लिम नौजवानों का फर्ज़ी इनकाउन्टर। और यह भयानक संप्रदायिक दंगों की बढ़ती हुई आग, जो बस्तियॉं की बस्तियां जलाकर राख कर देती है। ये सारी चीज़ें इस देश के प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि के लिये बड़ी चुनौती हैं।

हैरत तो इस पर होती है, कि बनाने वाले ने तो इन्सान को मिट्टी और पानी से बनाया था, फिर इसके अन्दर यह आग कहां से भर गयी ?

उठा तो आबो गिल से था इन्सान का ख़मीर
परवर दिगार ! इसमें कहां से भरी है आग !

यह तो आम लोगों का हाल है, जहां तक पूंजीपति या शासक वर्ग का सम्बंध है, तो उनकी स्थित भी आम लोगों से बेहतर नहीं, वह अगर्च दौलत के खजानों और सत्ता की कुर्सियों पर क़ाबिज़ होते हैं, और अपने अैश व आराम और शान व शौकत पर गर्व करते हैं, परन्तु सुख एवं शान्ति की दौलत से वह भी वंचित होते हैं, वह भी इन्हें खतरों से

दो चार होते हैं, जिन खतरों से आम लोग दो चार होते हैं।

यह बात दो-दो चार की तरह निगाहों के सामने है, हालात बिगड़ते हैं, तो छोटे और बड़े, कमज़ोर और ताकतवर, पुलिस और आर्मी, वज़ीर और रईस सब मारे जाते और सबको दिन में तारे नज़र आने लगते हैं।

क़िस्सा मुख्तसर, सुख एवं शान्ति से आज सभी वंचित हैं, और अगर इन्सान सुख एवं शान्ति की दौलत से वंचित हो, और हर पल खतरों के नरग़े में हो, तो फिर रस्सी भी उसे सांप नज़र आती है, और ज़िन्दगी की सारी लज़्ज़तें और सारी ऐश व आराम बेमज़ा होकर रह जातीं हैं।

चुनांच इस वक्त अत्याचार एवं आतंकवाद के नाम पर पूरी दुनिया में जितनी भी भयानक अन्यायपूर्ण कृत्य हो रहे हैं और जितने भी मुल्कों और जितनी भी हुकूमतों को मिटाया जा रहा है।

इसी तरह हमारे मुल्क हिन्दुस्तान में जिस तरह अंधाधुंध मुस्लिम युवकों की गिरफ्तारियां हो रही हैं, जिस तरह निर्दोष मुस्लिम नौजवानों के फर्ज़ी इन्काउन्टर हो रहे हैं, और जिस तरह पूरे मुल्क में ख़तरनाक साम्प्रदायिकता की भट्टियां दहकाई जा रही हैं, यह सब इसी बौखलाहट और इसी बेसुकूनी का नतीजा हैं। दुनिया की, और खुद हमारे भारत की यह दर्दनाक स्थित क्यों है ? इसके अनेक कारण गिनाये जा सकते हैं, मगर इस बात से इन्कार नहीं

किया जा सकता, कि इन अनेक कारणों में से एक महत्वपूर्ण कारण साम्प्रदायिक सदभाव की कमी है।

साम्प्रदायिक सद्भाव के अभाव ने पूरी दुनिया को बर्बादी के कगार पर ला खड़ा किया है। हमारा प्यारा मुल्क भी आज इसी साम्प्रदायिकता की आग में जल रहा है।

साम्प्रदायिकता की इस आग से किसी का भी घर या किसी का भी आशियाना सुरक्षित रहने वाला नहीं है, इसलिये इस देश के सारे बुद्धिजीवियों को इस गम्भीर समस्या पर विचार करना चाहिये और इस आग के बुझाने का तरीक़ा सोचना चाहिये।

किसी को यह ग़लतफहमी हर्गिज़ नहीं होनी चाहिये कि इस आग में अगर किसी दूसरे का आशियाना जल रहा है, तो खुद उसका आशियाना सुरक्षित रहेगा। या अगर किसी दूसरे के खेल-खलियान तक इसकी चिंगारियां पहुँच गयी हैं, तो खुद उसके खेत-खलियान तक उसकी चिंगारियां नहीं पहुँच सकेंगीं।

जो लोग भी साम्प्रदायिकता की आग भड़काते हैं वह मात्र इस वजह से भड़काते हैं कि उन्होंने अपने आपको पहचाना नहीं है। उन्होंने न अपने आपको पहचाना है, न दूसरों को पहचानने की कोशिश की है। बल्कि सही बात यह है कि उन्होंने अपने मालिक और रचयिता को नहीं पहचाना, हमें यह बात कभी नहीं भूलनी चाहिये कि इस धरती पर हम खुद से नहीं आ गये हैं बल्कि लाये गये हैं।

जिसने यह धरती बनाई है, उसी ने हमें इस धरती पर बसाया है, हमेशा के लिए नहीं बसाया है बल्कि कुछ दिनों के लिये बसाया है और यूं ही नहीं बसाया है बल्कि इसलिये बसाया है कि हम इस धरती पर रहते हुये, उसकी इताअत और आज्ञापालन करें और उसे भूलकर अपनी मनमानी न करने लगे।

उसने हमें इसलिये पैदा किया है, कि हम इस ज़मीन पर उसके अच्छे बन्दे बन कर रहें, और प्रत्येक कार्य उसकी मर्ज़ी के अनुसार करें, कभी उसकी नाफ़रमानी न करें, कभी कोई ऐसा कार्य न करें, जो उसकी खुदाई (ईशत्व) को चुनौती देने वाला और उसे क्रोध दिलाने वाला हो। दूसरों पर जुल्म व अत्याचार करने वाला और दूसरों के खून से अपने हाथ रंगने वाला व्यक्ति अपने खालिक और मालिक के क्रोध को ललकारता है। ऐसा व्यक्ति कभी अपने मालिक की पकड़ से बच नहीं सकता।

उसे कुछ दिन के लिये चाहे छूट मिल जायें, मगर एक न एक दिन उसे अपने जुल्म व अत्याचार का परिणाम भुगतना होगा।

अगर इस दुनिया में उसकी पकड़ नहीं हुई तो मरने के बाद आने वाली ज़िन्दगी में उसकी पकड़ यकीनी है। उस दिन की पकड़ से कोई भी ताक़त उसे बचा नहीं सकती।

अगर इन्सान इस बात को समझ ले, तो वह कभी दूसरों पर ज़्यादती न करें, कभी किसी का ख़ून न बहाये,

खून बहाना तो दूर रहा अगर कभी गलती से किसी को उससे कोई कष्ट पहुँच जाये, तो जब तक वह उससे माफ़ी न मांग ले, और उसके दिल को खुश न कर ले, उसे किसी पल चैन न मिले।

मामले की गम्भीरता का अंदाजा लगाने के लिये यह बात जान लेनी काफी है कि हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० जो अल्लाह के अन्तिम नबी थे, और जिनको आपके पालनहार ने सम्पूर्ण जगत के लिये दया और रहमत बनाकर भेजा था, और आप जब तक इस पृथ्वी पर रहे, सबके लिये रहमत बनकर रहे, आपके इस दुनिया से रुखसत होने का समय आया तो आपने सबको इकट्ठा करके कहा–

''मेरे भाइयों ! अब मेरे इस दुनिया से जाने का समय आ गया है, तो अगर मैंने किसी का कुछ लिया हो, तो यह मेरा माल मौजूद है, इस में से वह अपना हक़ वसूल करले, और अगर मैंने कभी किसी को कोड़ा लगाया हो, तो आज यह मेरी पीठ हाज़िर है, वह मुझे भी कोड़े लगा ले, और यह बिलकुल न सोचे कि इससे उसकी ओर से मेरा दिल मैला हो जायेगा।

नहीं, हर्गिज नहीं, नबी की शान यह नहीं होती कि वह अपने दिल में किसी के लिये मैला रखे।

मैं चाहता हूँ कि अपने पालनहार के यहां इस हालत में जाऊं, कि मेरी गर्दन पर किसी का कोई बोझ न हो।

आप सल्ल० ने यह ऐलान किया पर कोई व्यक्ति अपना वसूल करने के लिये सामने नहीं आया। आपने फिर कई नमाज़ों के बाद इसी तरह का ऐलान किया। परन्तु कोई सामने न आया, और सामने आता भी कौन ?

इसलिये कि आप सल्ल० तो प्यार व मुहब्बत का नमूना थे, आप तो सम्पूर्ण जगत के लिये दया व रहमत बन कर आये थे, आपने हमेशा दूसरों के आंसू पोछे थे, सदैव दूसरों का बोझ उठाया था, न कभी किसी को मारा, न किसी का हक दबाया, न किसी का दिल दुखाया।

हक़ीक़त यह है कि इन्सान के सामने सबसे बड़ी समस्या आखिरत (परलोक) की कामयाबी और नाकामी और आखिरत के इज़्ज़त और जिल्लत का है, बेवकूफ है वह व्यक्ति जो चार दिन की चांदनी से धोखा खा जाये, और नतीजे से ग़ाफिल होकर शक्ति और सत्ता के नशे में दूसरों का गला काटने लगे।

इस दुनिया में अपने आपको पहचानने, अपने क्रोध पर नियन्त्रण करने, इन्सानों के साथ इन्सान बनकर रहने, और ज़िन्दगी के सारे मामलों में अपने खालिक व मालिक की नाफ़रमानी से बचने के लिये आखिरत (परलोक) पर ईमान से बढ़कर दूसरी और कोई चीज़ नहीं।

इस ईमान और विश्वास की शिक्षा हर धार्मिक ग्रन्थ में मौजूद है, परन्तु यह भौतिकवादी इन्सान इस दुनिया से आगे कुछ सोचने के लिये तैयार नहीं, इसके जी में जो आ

जाये, उसे कर गुज़रता है, और यह नहीं सोचता कि उसका नतीजा क्या होगा ? मरने के बाद वह अपने मालिक को क्या मुंह दिखायेगा ?

यहां बात चल रही है साम्प्रदायिकता सदभाव की, इस अवसर पर इस बात की स्पष्टीकरण ज़रूरी है कि अल्लाह के भेजे हुये दीन में साम्प्रदायिकता की कोई जगह नहीं, इसलिये कि इस्लाम किसी सम्प्रदाय, किसी परिवार, किसी जाति, किसी नस्ल या किसी क़ौम का धर्म नहीं।

यह धर्म इस पृथ्वी पर बसने वाले सारे इन्सानों का धर्म है, और वह सारे इन्सानों को सम्बोधित करता है, अल्लाह तआला का इर्शाद है–

''लोगों ! तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारे पास खुला प्रमाण आ गया है। और हमने तुम्हारी ओर ऐसा नूर (प्रकाश) भेज दिया है जो तुम्हे साफ–साफ रास्ता दिखाने वाला है। अब जो लोग अल्लाह की बात मान लेंगे ओर उसकी पनाह ढूढेंगे उनको अल्लाह अपनी रहमत और अपने अनुग्रह व अनुदान के दामन में ले लेगा और अपनी ओर आने का सीधा मार्ग उनको दिखा देगा। (सुरह निसा– 175)

''लोगों, बन्दगी इख्तियार करो अपने उस रब की जो तुम्हारा और तुमसे पहले जो लोग हुये है उन सबका पैदा करने वाला है, तुम्हारे बचने की आशा इसी प्रकार हो सकती है'' (सूरह बकरा–21)

इसी प्रकार अल्लाह तआला एक तीसरे स्थान पर

अपने बन्दों को आवाज़ देता है–

''लोगों, अपने रब से डरो जिसने तुमको एक जान से पैदा किया और उसी जान से उसका जोड़ा बनाया और उन दोनों से बहुत मर्द और औरत दुनिया में फैला दिये। उस अल्लाह से डरो जिसका वास्ता देकर तुम एक–दूसरे से अपने हक मांगते हो, और नाते–रिश्तों के सम्बंधों को बिगाड़ने से बचो। यक़ीन जानो कि अल्लाह तुम पर निगरानी कर रहा है'' (सूरह निसां–1)

इसी प्रकार की आयतें पवित्र क़ुरआन में बहुत हैं, जिनसे स्पष्ट है कि यह धर्म किसी एक जाति, किसी एक समुदाय, या किसी एक नस्ल का नहीं, बल्कि इस ज़मीन पर बसने वाले समस्त मानवजाति का धर्म है। इसीलिये वह केवल मुसलमानों को नहीं पुकारता, बल्कि सारे इन्सानों को आवाज़ देता है, अल्लाह के भेजे हुये इस दीने रहमत पर यह बहुत बड़ा ज़ुल्म है कि इसे केवल मुस्लिम समुदाय का धर्म समझ लिया गया, और उसे भी इसी दृष्टि से देखा जाने लगा जिस दृष्टि से मुस्लिम समुदाय को देखा जाता है, और इससे भी वही ख़तरा महसूस किया जाने लगा, जो मुस्लिम समुदाय से महसूस किया जाता है।

अल्लाह तआला के भेजे हुये इस धर्म पर यह भी बहुत बड़ा अन्याय है कि उसके इस धर्म को भेजा था सारे इन्साने की भलाई और कल्याण के लिये, उनको अंधेरे से निकाल कर रोशनी में लाने के लिये, उन्हें नीचता से

उठाकर उच्चता तक पहुँचाने के लिये परन्तु इन्सानों की बड़ी तादाद ने इस धर्म की नाक़दरी की, और उसका चिराग बुझाने के लिये एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा दी।

हमारे देश के समस्त गणमान्य लोगों को यह जानना चाहिये, कि इस धर्म की बिल्कुल वही हैसीयत है जो हवा, पानी की है, जो सूरज चांद की है, जो ज़मीन और ज़मीन की समस्त नेमतों की है।

जिस प्रकार ख़ुदा की बनायी हुई यह सारी नेमतें किसी एक समुदाय, किसी एक नस्ल के लिये नहीं है बल्कि, इस देश के सारे नागरिकों के लिये हैं, बिल्कुल इसी प्रकार यह धर्म इस्लाम भी इस देश के सारे नागरिकों के लिये है, बल्कि इससे भी आगे बढ़कर इस पृथ्वी पर बसने वाले सारे इन्सानों के लिये है।

मेरे प्रिय देश के सम्मानित नागरिको ! यह हमारे पालनहार की बड़ी मेहरबानी है, कि उसने दुनिया की अनगिनत नेमतों के साथ-साथ हमें सीधे मार्ग की हिदायत दी, उसने हमें इस दुनिया में एक अच्छा जीवन व्यतीत करने का सलीक़ा सिखाया, उसने हमें बताया कि इस पृथ्वी पर कैसे चले-फिरें? कैसे बातचीत करें ? लोगों से किस प्रकार मिलें। कहा-

1- ''ज़मीन में अकड़कर न चलो, तुम न ज़मीन को फाड़ सकते हो, न पहाड़ों की ऊँचाई को पहुँच सकते हो'' (सूरह बनी इस्राइल- 37)

2– ''लोगों से मुंह फेर कर बात न कर, न ज़मीन में अकड़कर चल, अल्लाह किसी अहंकारी और डींग मारने वाले को पसन्द नहीं करता। अपनी चाल में संतुलन बनाये रख और अपनी आवाज़ तनिक धीमी रख, सब आवाज़ों से ज़्यादा बुरी आवाज़ गधों की आवाज़ होती है'' (सूरह लुकमान–18–19)

3– लोगों, हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और फिर तुम्हारी कौमें और बिरादरियां बना दीं ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो। वास्तव में अल्लाह की दृष्टि में तुम में सबसे ज़्यादा प्रतिष्ठित वह है जो तुम में सबसे ज़्यादा परहेज़गार है। यक़ीनन अल्लाह सब कुछ जानने वाला और खबर रखने वाला है। (सूरह हुजरात–13)

मेरे प्रिय भाइयो ! और आदरणीय देशवासियों ! यह कुछ उदाहरण हैं, यह अन्दाज़ा करने के लिये कि यह धर्म विशुद्ध स्नेह और प्रेम का धर्म है, यह समस्त इन्सानों को सम्मान देता, और उससे प्रेम करना सिखाता है, यह सारे इन्सानों को एक दूसरे का भाई, और एक ही माता–पिता की सन्तान बताता है, लेहाज़ा यहां साम्प्रदायिकता का क्या प्रश्न है?

साम्प्रदायिक विचारों को इस्लाम कभी प्रोत्साहन नहीं देता, वह ज़ुल्म और अन्याय, एक–दूसरे को दुख पहुँचाना, एक दूसरे के अधिकारों का हनन करना, और रक्तपात की कड़ी भर्तसना करता है और इसे घोर अपराध ठहराता है।

वह प्रत्येक जीवधारी को सम्मान जनक बताता है, चाहे वह किसी की जाति और बिरादरी का हो, किसी भी नस्ल और किसी भी कौम का हो, और अकारण हत्या को वह जघन्य अपराध करार देता है।

यहां कोई प्रश्न कर सकता है कि अगर इस्लाम प्रेम और करूणा का धर्म है, तो फिर उन युद्धों का क्या जवाब होगा, जो इस्लामी इतिहास में लड़े गये, हज़रत मुहम्मद सल्ल० के ज़माने में भी लड़े गये, और आपके बाद खलीफ़ाओं के जमाने में भी लड़े गये ।

फिर यह युद्ध यकायक नहीं लड़े गये बल्कि एक योजना के अन्तर्ग लड़े गये और युद्ध नहीं लड़े गये बल्कि पवित्र कुरआन के आदेशानुसार लड़े गये।

यह प्रश्न आमतौर से उलझन का विषय होता है, इसिलये कि मामले की मूल वास्तविकता लोगों के सामने नहीं रहती।

इन युद्धों के सम्बंध में पहली बात तो यह मस्तिष्क में रहनी चाहिये कि ये सारे युद्ध लोगों पर ज़बरदस्ती धर्म परिवर्तन के लिये नहीं लड़े गये थे, जैसा कि सारे दुनिया में इसका प्रोपेगन्डा किया गया है, इसलिये कि धर्म किसी पर थोपने की चीज़ नहीं है।

धर्म का सम्बंध सदैव दिल से होता है और अगर दिल उसे खुशी-खुशी स्वीकार न करे तो अल्लाह की निगाह में उस धर्म का मूल्य नहीं होता।

सच्ची बात यह है कि ये सारे युद्ध अत्याचारियों के अत्याचार के विरूद्ध लड़े गये थे। ये युद्ध आबादियों और बस्तियों में नहीं लड़े गये, बल्कि मैदानों में लड़े गये थे, आम लोगों से नहीं लड़े गये थे बल्कि उन युद्धों में किसी बच्चे पर, किसी बूढे पर, किसी औरत पर, किसी बीमार पर या किसी ऐसे व्यक्ति पर हाथ नहीं उठाया गया जो खुद युद्ध के लिए उत्साहित न हो।

इन युद्धों में बस्तियों को लूटा नहीं गया, औरतों की इज्ज़त पर हमला नहीं किया गया, उनके जानवरों को ज़िबह नही किया गया, इनके पेड़-पौधों को काटा नहीं गया, युद्ध स्थल से हटकर उन्हें किसी प्रकार की कोई हानि नहीं पहुँचाई गयी।

क्या युद्धों के इतिहास में इस प्रकार के किसी युद्ध का कोई दूसरा उदाहरण प्रस्तुत किया जा सकता है ?

निश्चित रूप से इस्लामी इतिहास में युद्ध हुये परन्तु दया और करूणा का रंग लिये हुये, युद्ध लड़े गये परन्तु नैतिक सीमाओं और नैतिक मूल्यों का लिहाज़ करते हुये। युद्ध लड़े गये परन्तु न्याय एवं इन्साफ़ के सारे तक़ाज़ों को दृष्टिगत रखते हुये।

सम्पूर्ण मानव इतिहास के सारे भयानक युद्ध हमारे सामने हैं, प्राचीन काल की खूंरेज जंग भी हमारे सामने हैं, और इस संस्कृतिकाल की डरावनी जंग भी हमारे सामने हैं।

क्या इन तबाहकारी लड़ाइयो का कोई सम्बंध है उन

लड़ाइयो से, जो विशुद्ध मानवीय प्रेम और मानवता की भलाई के जज़्बे से लड़े गये।

जिस समय इस्लाम आया है उस समय सारी दुनिया अत्याचारियों के पंजों में जकड़ी हुई थी, कुछ परिवार थे, जो सत्ता के मालिक थे, शेष लोग उनके गुलाम थे, जो उन अत्याचारी राजाओं के दयाभाव से जी रहे थे, हर प्रकार की स्वतन्त्रता से वंचित, हर प्रकार के सम्मान से वंचित। इस्लाम ने इन निर्दयी और स्वार्थी अत्याचारियों से जिहाद करके सारी मानवता को स्वतन्त्रता दिलायी और हरेक को सम्मान का वस्त्र पहनाया। आज दुनिया के प्रत्येक देश और देश के प्रत्येक नागरिक के अन्दर अपनी स्वतन्त्रता और सम्मान का जो एहसास पाया जाता है, ये इन्हीं इस्लामी युद्धों की बदौलत है। यहां एक चीज़ और समझने और विचार करने की है, दुनिया की जितनी भी विजेता कौमें हैं वह जब मुल्कों को फ़तेह करती हैं तो वहां की सारी दौलत लूटकर अपने मुल्कों में पहुंचा देती हैं, और इस हारे हुये देश को बिलकुल कंगाल बनाकर छोड़ देती हैं।

ऐसा अतीत में होता रहा है और आज के सभ्य एवं सांस्कृतिक काल में भी हो रहा है। आज ईराक और अफ़गानिस्तान की सारी दौलत कहां गयी।

मगर इस्लाम के मार्गदर्शक और नायक हज़रत मुहम्मद सल्ल० और आप पर जान देने वाले साथियों का मामला इससे बिलकुल अलग रहा है उन्होंने इन्सानीयत के

सम्मान और स्वतन्त्रता के लिये जानें क़ुर्बान कर दीं और हर प्रकार की क़ुर्बानियां दीं, हर प्रकार के कष्ट सहे, और हर प्रकार की मुसीबतें बर्दाश्त कीं, और जब वह इस देश के लोगों को अत्याचारी और अन्यायी हाकिमों के चंगुल से आज़ाद कराने में कामयाब हो गये, और उन्हें सम्मान का लिबास पहनाया, तो वहां से बिलकुल खाली हाथ वापस हो गये और अगर वहां कुछ दिनों के लिये ठहरे तो सिर्फ इसलिए ठहरे कि इस मुल्क को कुछ बनायें और संवारें और वहां ज्ञान एवं सभ्यता के दीपक रोशन करें।

इतिहास इस बात पर साक्षी है कि पूरे अरब प्रायद्वीप को फ़तेह कर लेने के बाद जब अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० का इन्तिकाल हुआ तो उस रात चिराग़ जलाने के लिये आप के घर में मिट्टी का तेल नहीं था।

इतिहास इस बात का भी साक्षी है कि प्रथम ख़लीफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ि० का जब देहान्त हुआ तो दो पुरानी चादरों का उन्हें कफन पहनाया गया। जबकि रोमी सलतनत का अधिकतर भाग जीता जा चुका था और वह चाहते तो मदीने में धन व दौलत के भण्डार लग जाते।

ये बातें रसूलुल्लाह सल्ल० और आपके उत्तराधिकारियों के साथ ही खास नहीं थीं बल्कि सारे सहाबा-ए- कराम की यही स्थित थी। इन लोगों की सारी क़ुर्बानियां और त्याग सिर्फ़ अपने पालनहार के लिये थीं, इस

दुनिया में उन्होंने अपनी क़ुर्बानियों का कोई सिला नहीं लिया। यह बात जहां गैर मुस्लिम भाईयों के समझने की है, वहीं खुद मुसलमानों के समझने की है, मुसलमानों को चाहिये कि वह अपने पूर्वजों के अच्छे उत्तराधिकारी बनें, अपने जीवन आचरण, अपने चाल-चलन और अपने रहन-सहन से इस ज़मीन पर दयापूर्ण धर्म के सच्चे प्रतिनिधि बनें, वह हर तरफ़ प्यार व मुहब्बत का पैग़ाम फैलायें और कभी भावनाओं में बहकर कोई गलत क़दम न उठायें।

हम इस देश में कभी हिन्दुओं के शत्रु बनकर न रहें, न कभी उनसे अधिकारों की लड़ाई लड़ें, इसके विपरीत हम उनके हमदर्द और शुभचिन्तक बनें और मुहब्बत के साथ उन्हें सीधे मार्ग पर लाने का प्रयत्न करें। इसलिये कि हमारा काम देना है, लेना नहीं।

अगर वह हमारे रास्ते में कांटे बिछायें तो हम उन पर फूलों की वर्षा करें। हम पवित्र क़ुरआन का बताया हुआ यह बहुमूल्य सिद्धान्त कभी न भूलें।

''और ऐ नबी, भलाई और बुराई समान नहीं है। तुम बुराई को उस नेकी से दूर करो जो बेहतरीन हो। तुम देखोगे कि तुम्हारे साथ जिसका बैर पड़ा हुआ था वह जिगरी दोस्त बन गया है। यह गुण प्राप्त नहीं होता मगर उन लोगों को जो सब्र करते हैं और यह पद प्राप्त नहीं होता

मगर उन लोगों को जो बड़े भाग्यवान हैं। (सूरह हाम.मीम सज्दा 34–35)

इस सिलसिले में हमारे पैगम्बर और मार्गदर्शक हज़रत मुहम्मद सल्ल० का जीवन–आचरण हमारे सामने है–

ताइफ़ में मुकद्दस खूं टपका–मक्के में कभी पत्थर खाये
बस एक तड़प और कैसी तड़प इन्सान हिदायत पा जाये

ग़ैर मुस्लिम भाइयों को भी यह समझना चाहिये कि अगर मुसलमान कोई ग़लती करते हैं तो इसकी वजह यह नहीं होती कि इस्लाम ने उन्हें यही सिखाया है बल्कि उसकी वजह वह होती है कि इन्होंने अपने धर्म को समझने, और उसकी शिक्षाओं पर अमल करने में ग़लती की।

उन्होंने जाने या अनजाने इस्लामी शिक्षाओं की अवहेलना करके खुद नुकसान उठाया, इस्लाम को नुकसान पहुंचाया, उसकी ग़लत तस्वीर प्रस्तुत करके सारी इन्सानीयत को नुकसान पहुंचाया।

मुसलमानों की ग़ल्तियों का बोझ कभी इस्लाम के सर नहीं डालना चाहिये, इसलिये कि यह चीज़ हकीकत के विरूद्ध है, और जो ऐसा करता है, वह खुद अपने आपको नुकसान पहुँचाता है, वह अपने आपको अपने रब की महानतम नेमत से वंचित कर लेता है।

इस नाउम्मीदी और निराशा का अन्दाज़ा चाहे आज न हो, परन्तु मरने के बाद अवश्य होगा, उस वक्त होगा

जिस वक्त मौक़ा हाथ से निकल चुका होगा, और अपनी बदकिस्मती पर हाथ मलने के अलावा इन्सान के बस में कुछ न होगा।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि एक ज़माने में इस्लाम ने पूरी दुनिया पर हुकूमत की थी, और सैकड़ों वर्ष तक हुकूमत किया, परन्तु इस हुकूमत में साम्प्रदायिकता नाम की कोई चीज न थी, इसलिये कि इस्लाम में साम्प्रदायिकता और दूसरों पर जुल्म व ज़्यादती की कोई गुन्जाइश नहीं।

इस हुकूमत में दुनिया भर की सारी जातियां शामिल थीं, और बिशुद्ध भाईचारा, प्रेम व मुहब्बत के माहौल में देश के निर्माण एवं विकास में व्यस्त थे। उस समय हुकूमत की सारी दौलत हथियार बनाने में खर्च नहीं होती थी बल्कि उन उपायों में खर्च होती थी जो आम और खास सभी के लिये लाभकारी हों, जिसके नतीजे में ऐसी सुन्दर और शानदार संस्कृति वजूद में आयी जिसकी मिसाल पेश करने से मानव इतिहास विवश है।

उस समय कोई आतंकवाद नहीं था, न आतंकवाद को मिटाने के नाम पर आतंकवादियों की कोई फौज थी, उस समय हर तरफ़ न्याय व इन्साफ़ का बोलबाला था, राजा हो या प्रजा हरेक क़ानून की नजर में बराबर था, उसका नतीजा यह था कि उस सलतनत में हर तरफ़ दूध और शहर की नहरें जारी थीं, जिनसे हरेक अपनी आवश्यकानुसार अपने प्याले को भरता था, और सारे लोग

शान्ति एवं प्रेम की शीतल छाओं में जीवन की पुरसुकून बहारें गुज़ारते थे।

वह प्रेम व मुहब्बत का ज़माना, वह सुख एवं शान्ति का ज़माना क्या दुबारा आ सकता है, तो किस प्रकार आ सकता है ? यह एक बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न है, जिस पर हम सबको विचार करना चाहिये।